Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2022, VOL-10/53
https://doi.org/10.21922/srjhsel.v10i53.11645

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य और उसकी प्रासंगिकता

देवेंद्र कुमार यादव, Ph. D.

असि. प्रोफेसर, मोहम्मद हसन पी.जी. कॉलेज, जौनपुर, उ.प्र.

Paper Received On: 25 SEPTEMBER 2022

Peer Reviewed On: 30 SEPTEMBER 2022

Published On: 1 OCTOBER 2022

Abstract

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई सन् 1861 ई० को बंगाल के एक शिक्षित धनी तथा सम्मानित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम महर्षि देवेंन्द्र नाथ टैगोर था। देवेन्द्र नाथ अपने पुत्र टैगोर को संस्कृत शिक्षा के साथ–साथ भारतीय दर्शन एवं नक्षत्र विज्ञान (ज्योतिष शिक्षा) की शिक्षा दिलाई। सन् 1877 ई० में रविन्द्रनाथ टैगोर को कानून पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया परंतु वहां उन्हें संतुष्टि नहीं हुई और वे बिना कोई शिक्षा की डिग्री लिए हुए वापस भारट लौट आए। रविन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा अधिकतर गृह शिक्षण तथा स्वाध्याय के द्वारा घर पर ही हुई। उन्होंने वे बाल्यावस्था से ही बंगाली पत्रिकाओं में लेखन लिखते थे तथा लोगों के बीच लेखना भी प्रारंभ कर दिये थे। उन्होंने प्रशंसनीय कविताएं, उपन्यास, नाटक इत्यादि लिखें। इससे वे केवल एक सुप्रसिद्ध कवि उपन्यासकार नाटकार चित्रकार तथा दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उसके बाद उन्हें ऋषि की संज्ञा से विभूषित करके गुरू देव कहा जाने लगा। उनकी प्रथम रचना गीतांजली जिसमें उन्हें नोबेल पुरस्कार दिया गया। उसी वर्ष (1913 ई०) उनको कलकत्ता विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया। 1915 ई० में भारत सरकार ने भी नाइटहुड की उपाधि प्राप्त की परंतु उन्होंने इस उपाधि को जलियांवाला बाग नामक हत्याकांड के विरोध में लौटा दिये। वे 22 सितंबर 1921 को विश्व भारती नामक विश्व प्रसिद्ध शैक्षिक संस्था की स्थापना की। इस संस्था के विकास के लिए उन्होंने 20 वर्ष तक अथक प्रयास किया। अंत में उनकी जीवन लीला सन् 1941 में समाप्त हो गई। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानना था कि प्रकृति मानव तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में परस्पर मेल एवं प्रेम होना चाहिए। वे सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान के सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित करना चाहते थे। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक के विकास को शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे। उन्होंने (टैगोर) लिखा है "प्रकृति के पश्चात् बालक को सामाजिक व्यवहार की धारा के संपर्क में आना चाहिए।" टैगोर की शिक्षा मानव के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्षरत रहता हैं तथा उन्होंने अपनी शिक्षा संस्थाओं में शैक्षिक प्रयोग किए जिन्होंने उनको आदर्श का सजीव प्रतीक बना दिया। टैगोर के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास करना। इस उद्देश्य का ध्यान में रखते हुए उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के अनेक विषयों को शामिल किया है। विषयः इतिहास, प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य इत्यादि। क्रियाएंः नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना इत्यादि, अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाएंः खेलकूद, समाज सेवा,

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

छात्र स्वाशासन इत्यादि। टैगोर ने पाठ्यक्रम को विस्तृत बनाने का परामर्श दिया है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम को इतना व्यापक होना चाहिए कि बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके। टैगोर ने किसी निश्चित पाठ्यक्रम की योजना नहीं बनायी।

मूलशब्दः *प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना।*

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

प्रसिद्ध धर्म सुधारक महर्षि देवेन्द्रनाथ के सुपुत्र कविवर गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर केवल उच्च कोटि के कवि एवं विचारक थे वरन् एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। टैगोर का जन्म कलकत्ता में सन् 1861 में 6 मई को हुआ था और साहित्य, कला तथाा दर्शन के क्षेत्र में अपनी अनुपम उपलब्धि से भारत के मस्तिष्क को ऊँचा करके एवं संसार में भारत के योगदान को अनुकरणीय सिद्ध करके सन् 1941 में वह गोलोकवासी हुए। टैगोर का परिवार शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत समृद्ध था। संपूर्ण बंगाल में यह परिवार अपनी कलाप्रियता, विद्याव्यसन एवं संगीत प्रेम के लिए विख्यात था। टैगोर के पिता देशभक्त, विद्वान एवं धर्मपरायण थे। रवीन्द्रनाथ महर्षि देवेन्द्रनाथ के सबसे छोटे पुत्र थे।

विद्यालय में तो वे नाममात्र को गये। घर में पैसे की कमी थी नहीं। अतः प्रारंभ में उनकी शिक्षा घर पर जितनी हुई उतनी विद्यालय में नहीं। उन्हें घर पर ही संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा प्राप्त हुई और इन विषयों को पढ़ाने के लिए अलग–अलग शिक्षकों की व्यवस्था की गई थी। सन् 1878 में टैगोर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत गये। इनके साथ इनके भाई भी इंग्लैंड गये। इंग्लैंड में वे बाइटन विद्यालय में भरती हुए किंतु इस विद्यालय में वे अधिक दिन न रह सके। यहाँ वे वे लंदन के लिए रवाना हो गये। किंतु लंदन में किसी विद्यालय में प्रवेश नही प्राप्त किया।

राजनीतिक, समााजिक एवं शैक्षिक कार्यो को करते हुए भी उनकी साहित्य साधना अनवरत रूप से चलती रहीं और महाकवि एवं साहित्यकार के रूप में उनका व्यक्तित्व निखरता गया। टैगोर विश्वकवि थे और गीतांजली उनका विश्वविख्यात रचना है।

टैगोर परमार्थ में आस्था रखते थे और विश्व की सर्वोच्च भक्ति के रूप में उस महापुरूषको स्वीकार करते थे। उनके लिए परमपुरूष सत्यम, शिवम् एवं सुंदरम् का प्रतीक है। टैगोर मानव में आस्था रखते थे और उन्हें उच्चकोटि का मानववादी कहा जा सकता

है। एक महाकवि होने के नाते उन्होंने संवेगों एवं स्थायी भावों के दमन का परामर्श नहीं दिया है वरन् व्यक्ति की सभी भक्तियों के सामंजस्यपूर्ण विकास का समर्थन किया है। टैगोर ने शिक्षा के सिद्धांतों की खोज अपने अनुभव से की है।

विश्व बंधुत्व के पणेत्ता तथा सत्यम्, शिवम् एवं सुंदरम् के प्रतीक गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। वे कवि एवं कलाकार होने के साथ–साथ एक महान शिक्षाशास्त्री भी थे। टैगोर ने अपने अनुभव से शिक्षा के सिद्धांतों की खोज की थी। विश्व भारती के संस्थापक के रूप में वे एक व्यावहारिक शिक्षाशास्त्री होने का परिचय देते थे। टैगोर प्रकृतिवादी, रहस्यवादी, आत्मावादी एवं उच्च कोटि के मानवतावदी थे, उनके और अतीत भारत की आत्मा को आधुनिक भारत की आत्मा में देखना चाहते थे। आध्यात्मिकता की बात करके टैगोर ने भारत के अतीत का सम्मान किया है, और उसी वर्तमान को आधारित करना चाहा है। टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के बहुत बड़े समर्थक थे और बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय भावना जागृत करना चाहते थे।

टैगोर की शांति निकेतन शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है, वे तत्कालीन शिक्षा प्रणाली से अत्यंत असंतुष्ट थे। उन्होंने शिक्षा के कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन किया और बाद में उन्हें अपने 'शांति निकेतन' में व्यवहारिक रूप दिया। विश्वभारती उनकी शैक्षिक विचारधारा का व्यवहारिक रूप है। यह टैगोर के गुरूदेवत्व का प्रतीक है। टैगोर ने अपने शांति निकेतन में किसी पाश्चात्य शैक्षिक विचाराधारा का अंधानुकरण नहीं किया और न ही अपने विद्यालय को किसी पश्चिमी शिक्षा–प्रणाली पर आधारित किया। उन्होंने अपने शिक्षा सिद्धांत की खोज स्वयं की। उनके शैक्षिक विचार उनके स्वअनुभव पर आधारित थे। जिस समय भारतीय विश्वविद्यालयों में पश्चिमी सिद्धांतों को दिव्य मानकर आत्मसात् किया जा रहा था उस समय वे शिक्षा के नये सिद्धांतों का पता लगाने में जुटे हुए थे। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा की बात करके तथा अनुभव केंद्रित पाठ्यक्रम पर बल देकर वे अपने समय की शिक्षा–प्रणाली में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे।

शोध का महत्त्वः– वर्तमान समय की शिक्षा संबंधी समस्याओं को देखते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों में यह देखने का प्रयास किया गया है, कि इनके विचार कहा तक वर्तमान शिक्षा की समस्याओं को दूर करने में सहायक है। इस शोध अध्ययन में प्राप्त

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

परिणाम से यदि समाज में श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों का निर्माण होता है, तथा व्यक्तियों में राष्ट्र प्रेम एवं विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास होता है, तो वर्तमान शिक्षा की योजना बनाने में प्रस्तुत शोध का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, तथा इनके शैक्षिक विचारों से राष्ट्र को एक नई शिक्षा प्रदान की जा सकती है, तथा शिक्षण स्तर में भी सुधार लाया जा सकता है।

टैगोर के शिक्षा दर्शन के सिद्धांत इस प्रकार है

1. बालक की शिक्षा उसकी मातृ भाषा के माध्यम से होनी चाहिए।
2. शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
3. बालक की रचनात्मक प्रवृत्तियों के विकास के लिए आत्म प्रकाशन का अवसर दिया जाना चाहिए।
4. बालक की शिक्षा नगरो से दूर प्रकृति की गोद में होनी चाहिए।
5. शिक्षा द्वारा बालक की समस्त शक्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास होनी चाहिए।
6. बालक को प्रकृति वातावरण में स्वतंत्रता पूर्वक स्वयं करके सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

टैगोर के अनुसार शिक्षा की धारणा :– रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा की धारणा शरीर तथा आत्मा से है, जो प्रकृति की गोद में स्वस्थ एवं प्रशांत प्रसन्नचित होकर विकास करता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का अर्थ :– गुरूदेव भारत में एक ऐसी शिक्षा चाहते थे जो वातावरण के निकटतम संपर्क में दी जाये। वह समझते थे कि शिक्षा का उद्धेश्य संपूर्ण प्रकृति तथा संपूर्ण जीवन से व्यक्ति में एकत्व की भावना का विकास है। सुसंयोजित व्यक्ति के लिए वह एकत्व की भावना ही सबसे महत्वपूर्ण समझते थे। वह चाहते थे कि शिक्षा द्वारा विद्यार्थी में यह क्षमता विकसित हो जाये कि वह प्रकृति के साथ सामंज्स्य स्थापित कर सके और समाज के साथ मनुष्यता का व्यवहार कर सकें।

टैगोर के शिक्षा का उद्धेश्य शारीरिक विकास का उद्धेश्य

1. मानसिक विकास का उद्धेश्य
2. शिक्षा तथा जीवन में सामंजस्य स्थापित करना
3. आध्यात्मिक संस्कृति का विकास करना

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

4. पूर्व मानव के रूप में विकसित करना
5. सत्य एवं एकता कायम रखना।

टैगोर के अनुसार पाठ्यक्रम

टैगोर के अनुसार शिक्षा का मख्य उद्धेश्य पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास करना। इस उद्धेश्य का ध्यान में रखते हुए उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के अनेक विषयों को शामिल किया है। विषयः इतिहास, प्रकृति अध्ययन, भूगोल, साहित्य इत्यादि। क्रियाएंः नाटक, भ्रमण, बागवानी, क्षेत्रीय अध्ययन, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, मौलिक रचना इत्यादि। अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाएंः खेलकूद, समाज सेवा, छात्र स्वशासन इत्यादि।

टैगोर ने पाठ्यक्रम को विस्तृत बनाने का परामर्श दिया है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम को इतना व्यापक होना चाहिए कि बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके। टैगोर ने किसी निश्चित पाठ्यक्रम की योजना नहीं बनायी। उन्होंने पाठ्यक्रम के संबंध में सामान्य विचार यत्र–तत्र प्रस्तुत हैं और उन्हीं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे सांस्कृतिक विषयों को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान देते थे। विश्वभारती में इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, प्रकृति अध्ययन आदि की शिक्षा तो दी ही जाती है, साथ ही अभिनय, क्षेत्रीय अध्ययन, भ्रमण, ड्राइंग, मौलिक रचना, संगीत, नृत्य आदि की भी शिक्षा का विशेष प्रबंध है। रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा निर्मित शांति निकेतन और विश्व भारती के पाठ्यक्रम को देखा जाए तो वह विषय केंद्रित न होकर बाल केंद्रित है वहां विभिन्न प्रकार के क्रियाएं देखने को मिलते हैं जैसे प्रातः कालीन प्रार्थना, सरस्वती यात्राएं, गायन, नृत्य, ड्राइंग, परिभ्रमण, प्रयोगशाला के कार्य, छात्रों का स्वशासन, खेलकूद, समाज सेवा आदि को पाठ्यक्रम अनुभव केंद्रित पाठ्यक्रम है और इसका श्रेय रवीन्द्रनाथ टैगोर को जाता है।

टैगोर की शिक्षण विधि

टैगोर ने अपनी शिक्षण विधि में निम्नलिखित सिद्धांत इस प्रकार दिए हैं :–

1. शिक्षण विधि को बालक की स्वाभाविक, रूचियों, और आवेगो पर आधारित होना चाहिए। शिक्षण विधि में वाद–विवाद और प्रश्नोत्तर का प्रयोग करना चाहिए।
2. शिक्षण विधि में नृत्य अभिनय दस्तकारी को स्थान मिलनी चाहिए।
3. शिक्षण विधि में बालक के अनुभव सौर इंद्रियों का प्रयोग करनी चाहिए।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

टैगोर ने शिक्षण विधि को सर्वोत्तम विधि बताते हुए लिखा है "भ्रमण के समय शिक्षण सर्वोत्तम विधि है।" शिक्षण–विधि का अन्य महत्त्वपूर्ण सिद्धांत क्रिया–सिद्धांत है। टैगोर शरीर और मस्तिष्क की शिक्षा के लिए क्रिया को आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार बालक को किसी हस्तकला में अवश्य प्रशिक्षित किया जाए। वे पेड़ पर चढ़ने, कूदने, बिल्ली या कुत्ते के पीछे दौड़ने, फल तोड़ने, हँसने, चिल्लाने, ताली बजाने, अभिनय करने को शिक्षण की आवश्यक प्रविधि या युक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। वे विभिन्न विषयों – जीव विज्ञान, विज्ञान, खगोल विद्या, भूगर्भ विद्या आदि की शिक्षा प्राकृति इस प्रकार शिक्षण की वे मनोवैज्ञानिक विधियों का समर्थन करते थे।

टैगोर के अनुसार शिक्षक का स्थान

टैगोर का मानना था कि मनुष्य को केवल मनुष्य ही पढ़ा सकता है। उन्होंने अपनी शिक्षा योजना में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिए तथा वे शिक्षक को मुख्य आधार मानते थे :–

1. शिक्षक बालक की पवित्रता में विश्वास करते हुए उसके साथ प्रेम तथा सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करें।
2. शिक्षक पुस्तकीय ज्ञान पर ध्यान कम दे तथा ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें क्रियाशील रहते हुए बालक अपने नीति अनुभव द्वारा स्वयं सीखतें रहें।
3. शिक्षक बालक को रचनात्मक कार्य करने के लिए उत्तेजित करते रहें।

ग्रामीण शिक्षा की व्यवस्था :– टैगोर जी पहले शिक्षा दार्शनिक थे जिनका ध्यान उपेक्षित ग्रामीणों की शिक्षा की ओर गया। इन्होंने ग्रामीण जीवन को समुन्नत करने के लिए श्री निकेतन विभाग की स्थापना की। जिसमें शैक्षिक ज्ञान के साथ कृषि, कुटीर उद्योग, पशुपालन ग्रामीण आदि की शिक्षा दी जाती थी। यह उनका योगदान भारतीय समाज और भारतीय परिस्थिति के लिए बहुत ही उपर्युक्त है। क्योंकि भारत गाँवों का देश है जहाँ 80 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और जब तक गाँव का अंतिम व्यक्ति विकसित नहीं होगा तब तक देश का विकास संभव नहीं है यही परिकल्पना आचार्य विनोवा भावे और महात्मा गाँधी जी का भी है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ सूची

सक्सेना, एन० आर० स्वरूप एवं कुमार संजय – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ– 2013।

पी० डी० पाठक– शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा– 2013।

अजीत, ज्ञान कुमारी– सेवा का त्रिवेणी, उ० प्र० पूर्वी रीजन, टी० ओ० एस० इलाहाबाद– 2002।

अय्यर, सी० पी० रामासवामी– एनी बेसेण्ट, पब्लिकेशंस डिवीजन, भारत सरकार, नई दिल्ली– 1992।

ओड, लक्ष्मी लाल के– शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर– 1994।

गुप्त, लक्ष्मी नारायण– महान, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद– 1992।

गुप्ता, एस० पी०– भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याऐं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद– 1998।

जोशी, शान्ति– समसामयिक भारतीय, दार्शनिक लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद– 1975।

लॉड, अशोक कुमार– भारतीय दर्शन में मोक्ष चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल– 1973।

वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद– विश्व के महान शिक्षा शास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना– 1972।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language